B I year. II Paper. A133

I UNIT

Pending

भारतीय समाज की संरचना : ग्राम कस्बा व नगर.

गाँव की अवधारणा :- गाँव की अवधारणा समाजशास्त्र के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें ग्राम की संरचना, जनसंख्या, संस्कृति, खान-पान व पहनावा आदि का अध्ययन किया जाता है। भारत जैसे ग्राम प्रधान देश में संकल्पना का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण है। ग्राम कोई नया शब्द नहीं, क्योंकि आदिकाल से ही इसका प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों को स्थायित्व प्रदान करने वाले संगठन के रूप में किया जाता रहा है। जहाँ तक भारतीय समाज की संरचना का प्रश्न है तो वह काफी पुरानी एवं गौरवपूर्ण है। तथा उसने अपने ज्ञानमय प्रकाश से पथभ्रष्ट मानवता का निरंतर मार्ग प्रशस्त किया है। भारतीय सामाजिक संरचना ने विश्व की विभिन्न संस्कृतियों, विचारों, प्रजातियों, दर्शनों, धर्म, भाषाओं आदि के प्रति अत्यन्त सहनशीलता का परिचय देते हुए उन्हें अपने में स्थान दिया है।

भारतीय समाज की संरचना का एक और महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि समाज गाँव-कस्बों और नगरों का होते हुए भी मौलिक रूप में एकता प्राप्त किये हुए है।

यहाँ हम गाँव की अवधारणा को भारतीय संदर्भ में विस्तार से जानेंगे।

Scanned with CamScanner

BA I year, A133.

कस्बे की अवधारणा :=

जब कोई ग्राम जनसंख्या की दृष्टि से अधिक व्यापक हो जाय और अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ कुछ विकसित हो जाय तो वह कस्बा कहलाता है। जो गाँव से बड़ा व नगर से छोटा होता है।

कस्बे का अर्थ एवं परिभाषाएं :-

बर्गल के अनुसार := "कस्बा एक ऐसी नगरीय बस्ती के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो पर्याप्त आयामों के ग्रामीण क्षेत्र पर आधिपत्य रखता है।"

ऐसा कहा जाता है कि जब कोई गाँव नगरों की भाँति कुछ विकसित हो जाय और लोगों के रहन-सहन में परिवर्तन आने लगे तो वह ग्राम 'कस्बों' का स्वरूप प्राप्त कर लेता है। धीरे-धीरे कस्बे में विकास और अधिक होने लगता है। और लोगों को उनकी आवश्यकतानुसार हर सुविधा का लाभ मिलने लगता है।

1901 की जनगणना में कस्बा उस क्षेत्र को कहते हैं जिसमें ये चार विशेषताएं आती हैं :-

1. सिविल लाइन का क्षेत्र जो नगरपालिका के वहत न हो,
2. प्रत्येक प्रकार का छावनी क्षेत्र,
3. वह स्थायी निवास स्थान जहाँ कम से कम 5,000 की जनसंख्या हो,
4. किसी भी आकार की नगरपालिका।

Scanned with CamScanner

गाँव एवं ग्रामीण समुदाय का अर्थ व परिभाषा
(Meaning and Definition of Villages or Rural Community)

गाँव का उदय उस समय हुआ जब मानव घुमन्तू जीवन का परित्याग कर अपने परिवार के साथ एक स्थायी निवास बनाकर रहने लगा। प्रारम्भ में मानव कृषि से अनभिज्ञ था, लेकिन मानव को कृषि के बारे में धीरे-धीरे जानकारी प्राप्त हुई और इस रूप में ज्ञान और मेहनत के बल पर प्रकृति से कुछ प्राप्त करने और धरती से अन्न उपजाने की कला का सूत्रपात हुआ। इसी मानव ने धीरे-धीरे नगर-जैसी महान् चीजों का विकास किया, जिसमें सब कुछ कृत्रिम और नवीन था, लेकिन इसमें दो राय नहीं कि यह एक अद्भुत शक्ति थी, जिसने स्वयं ग्रामों को प्रभावित किया है। ग्राम और नगर के मध्य 'कस्बे' स्थित हैं।

ये तीनों ही अपने-अपने गुणों से मानव जीवन को प्रभावित करते हैं और स्वयं भी परस्पर प्रभावित होते हैं। यहाँ हम सबसे पहले गाँव या ग्रामीण समुदाय के बारे में जानेंगे!

आदिकाल से ही गाँव का प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों को स्थायित्व प्रदान करने वाले संगठन के रूप में किया जाता रहा है। गाँव के लिए पहले 'ग्रिहा' या 'गिरोह' और 'झुण्ड' तथा 'याली' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता था। सिम्स (Sims) के अनुसार गाँव वह नाम है, जो साधारणतया प्राचीन कृषकों की बस्ती को दर्शाता है; क्योंकि समाजशास्त्र में गाँव को एक समुदाय माना जाता है, इसलिए ज्यादातर विद्वानों ने 'गाँव' की परिभाषा 'ग्रामीण समुदाय' के रूप में दी है। यहाँ हम कुछ परिभाषाओं पर प्रकाश निक्षेप कर रहे हैं

सेण्डरसन (Sanderson) के शब्दों में"एक ग्रामीण समुदाय वह स्थानीय क्षेत्र है, जिसमें वहीं निवास करने वाले लोगों की सामाजिक अन्तर्क्रिया और उनकी संस्थाएँ शामिल हैं जिनमें यह खेतों के चारों ओर बिखरी झोपड़ियों अथवा ग्रामों में रहता है और जो उनकी सामान्य गतिविधियों का केन्द्र है।"

पीके (Peake) के शब्दों में"ग्रामीण समुदाय परस्पर सम्बन्धित और असम्बन्धित उन व्यक्तियों का समूह है, जो अकेले परिवार से अधिक विस्तृत एक बहुत बड़े घर अथवा परस्पर निकट स्थित घरों में कभी अनियमित रूप में तथा कभी एक गली में रहता है तथा मूलतः अनेक कृषि योग्य खेतों में सामान्य रूप से कृषि करता है, मैदानी भूमि को आपस में बाँट लेता है और आस-पास की बेकार भूमि में पशु चराता है जिस पर निकटवर्ती समुदायों की सीमाओं तक वह समुदाय अपने अधिकार का दावा करता है।"

ए.आर देसाई ने लिखा है कि "गाँव, ग्रामीण समाज की इकाई है। यह एक रंगमंच है जहाँ ग्रामीण जीवन का प्रमुख भाग स्वयं प्रकट होता है और कार्य करता है। इनका विचार है कि ग्राम सामूहिक निवास स्थान की प्रथम स्थापना कृषि अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति है।"

मेरिल और **एलरिज** (Merill and Elridge) के अनुसार"ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं और ऐसे व्यक्तियों का संकलन होता है, जो छोटे से केन्द्र के चारों ओर संगठित होते हैं तथा सामान्य प्राकृतिक हितों में भाग लेते हैं।"

अतः इन परिभाषाओं के द्वारा हमें ग्रामीण समाज के विषय में जानकारी मिलती है। यदि गाँव के विषय में कहा जाय तो हमारे सामने किसान, मेहनती महिलाएँ व मासूम बच्चों की छवि उभर कर आती है गाँव के लोगों का मुख्य पेशा आज भी कृषि ही है। ग्रामीण लोगों का जीवन बहुत सरल और सीधा-सादा होता है, वे एक-दूसरे से भावात्मक रूप से जुड़े होते हैं और अपनी जरूरतों की पूर्ति भी एक-दूसरे के माध्यम से कर लेते हैं।

Scanned with CamScanner

भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों के प्रकार (Types of Indian Villages)

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के साथ ही साथ एक ग्रामीण प्रधान देश भी है; क्योंकि इस देश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों अर्थात् गाँवों में बसती है। ऐसा हम इसलिए कह सकते हैं; क्योंकि 2001 में जो जनगणना की गयी थी उससे पता चला है कि 72.20 प्रतिशत जनता गाँवों पर निर्भर है। भारतीय गाँव छोटे, बड़े व मध्यम स्वरूप में पाये जाते हैं, साथ ही कुछ विकसित हैं, तो कुछ अर्द्धविकसित या कुछ बिलकुल ही पिछड़े हुए हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारतीय गाँव भिन्न-भिन्न स्थितियाँ दर्शाते हैं। किसी गाँव में शहरों-जैसी हर सुविधा देखने को मिलती है तो किसी गाँव में केवल प्रतिकूल परिस्थितियाँ ही देखी जा सकती हैं। गाँव के कई स्वरूप होते हैं। हालाँकि भारत में 50 गाँव मध्यम आकार (जिनकी आबादी 500 से 2000 के बीच में हैं) के पाये जाते हैं। सैद्धान्तिक तौर पर डॉ. श्यामाचरण दुबे का कथन है कि हम गाँव का वर्गीकरण एकाधिक आधारों पर कर सकते हैं। उनके द्वारा कुछ आधारों का उल्लेख किया गया है जिनका वर्णन निम्नलिखित है

1. आकार, जनसंख्या और भूमि के क्षेत्रफल पर आधारित,
2. प्रजातीय तत्त्व और जातियों पर आधारित,
3. भूमि के स्वामित्व पर आधारित,
4. अधिकार और सत्ता पर आधारित,
5. अन्य समुदायों की भाँति भारतीय गाँवों को छः भागों में विभाजित किया गया है, जो निम्न प्रकार हैं
   - (i) 500 से कम जनसंख्या वाले गाँव।
   - (ii) 500 से 999 की जनसंख्या वाले गाँव।
   - (iii) 1,000 से 1,999 तक की जनसंख्या वाले गाँव।
   - (iv) 2,000 से 4,999 की जनसंख्या वाले गाँव।
   - (v) 5,000 से 9,999 तक की जनसंख्या वाले गाँव।
   - (vi) 10,000 और उससे अधिक की जनसंख्या वाले गाँव।

भारत में जिन गाँवों की जनसंख्या कम होती है उन्हें खे और पुरवा के नाम से जाना जाता है। दक्षिण भारत में छोटे-छोटे गाँव को गुम्पू या मजरा की संज्ञा दी जाती है। सन् 1991 की जनगणना रिपोर्ट में भारतीय गाँव 5,58,088 थे जो 2001 की जनगणना के हिसाब से 5,93,616 हो गये।

भारतीय ग्रामीण जीवन के आधारभूत लक्षण (Basic Features of Indian Village Life)

भारत देश की प्रमुख विशेषता रही है कि इसमें विभिन्न प्रकार के लोगों के भिन्न-भिन्न त्यौहार, प्रथाएँ, संस्कृतियाँ आदि देखने को मिलती हैं और जहाँ तक ग्रामीण क्षेत्रों की बात है तो वहाँ तो ये सब और भी निष्ठा एवं प्रेमपूर्वक संपन्न किये जाते हैं। ग्रामीणों के द्वारा हर प्रथा, हर त्यौहार को मनाते हुए देखना स्वयं में उत्साह व उत्साह का संचार करता है। भारतीय ग्रामीण समाज की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि आज भी वहाँ संयुक्त परिवार प्रणाली देखी जा सकती है। लोगों में ऊँची-नीची जाति को लेकर भेदभाव किये जाते हैं। साथ ही अंधविश्वास भी लोगों में देखने को मिलता है। भारतीय ग्रामीण जीवन के कुछ आधारभूत लक्षणों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया गया है

(1) सामाजिक गतिशीलता का अभाव (Lack of social mobility) पुरानी सोच व रीति-रिवाजों के तहत नयी प्रक्रिया या सोच को जन्म दिया ही नहीं जाता है। जो अनन्त काल से प्रथा व रिवाज चल

Scanned with CamScanner

रहा है, उसी पर लोग अमल करते हैं।

(2) जाति व्यवस्था का महत्त्व (Importance of caste system)भारतीय गाँवों में जाति को लेकर लोगों में बहुत अंधविश्वास रहता है। जो लोग स्वयं को उच्च जाति का मानते हैं, वे अपने से नीची जाति के यहाँ पानी तक नहीं पानी चाहते हैं। उन्हें मंदिर में भी नहीं जाने दिया जाता है। इस प्रकार कई प्रकार के भेदभाव गाँवों में जातियों को लेकर अब भी देखने को मिलते हैं।

(3) नारी की निम्न स्थिति (Low status of women)कुछ गाँवों में लड़कियों को आज भी अभिशाप माना जाता है और उनके जीवन-स्तर को बेहतर बनाने के लिए विशेष कुछ नहीं किया जाता है। उन्हें घर के कामकाज व अपने रीति-रिवाजों के तहत बड़ा करके शादी के बँधन में बाँधकर उनसे छुटकारा पा लिया जाता है, पति की सेवा, घर का कामकाज बच्चों का लालन-पालन इन सब के बीच नारी का अपना कोई अस्तित्त्व ही नहीं रह जाता है।

(4) कृषि व्यवसाय (Agricultural Occupation) भारतीय गाँवों की बात आते ही सबसे पहले कृषि की छवि हमारे सामने आती है; क्योंकि भारतीय गाँवों में हमेशा से ही कृषि की प्रधानता रही है। आज भले ही लोग कृषि के साथ और कार्यों से भी जुड़ गये हैं परंतु फिर भी कृषि ही उनके जीवन का आधार होता है।

(5) व्यवसाय में विशेषीकरण की कमी (Lack of Specialization in occupation)ग्रामीण वासियों ने कृषि को ही अपना जीवन स्रोत मान लिया है। इस कारण वे अन्य किसी काम को करने में सक्षम होते हुए भी उससे पीछे हट जाते हैं और कृषि पर ही सारा ध्यान केंद्रित कर देते हैं। उनका मानना होता है कि यदि खेती नहीं करेंगे तो खायेंगे क्या और अपने बच्चों का पेट कैसे भरेगें?

(6) संयुक्त परिवार की प्रधानता (Dominance of joint family)भारत के ग्रामीण इलाकों में लोग एक ही परिवार में मिल-जुल कर रहते हैं। घर का सबसे बड़ा सदस्य घर का मुखिया होता है। उसके निर्देशानुसार घर के बाकी सदस्य काम करते हैं।

(7) प्रकृति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध (Direct relation to nature)कहा जाता है कि गाँव के लोगों का प्रकृति से बहुत अच्छा संबंध होता है; क्योंकि प्रकृति ही उनके जीवकोपार्जन अर्थात् कृषि का स्रोत होती है। कृषि के लिए उन्हें वर्षा पर और फसल पकने के लिए सूर्य पर निर्भर रहना पड़ता है। इस प्रकार प्रकृति इनके लिए भगवान् स्वरूप होती है।

(8) जनसंख्या का कम होना (Less density of Population)खेतों के कारण ग्रामीण क्षेत्र बड़ा होता है। परंतु शहरों की अपेक्षा यहाँ लोगों की कमी पायी जाती है।

(9) सजातीयता (Homogeneity)भारतीय ग्रामीण समाज के सदस्यों में सजातीयता पायी जाती है यहाँ सदस्यों की जीवन-पद्धति, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, व्यवसाय तथा सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार लगभग एक समान होता है। इसलिए लोगों के बीच एकरूपता अधिक देखी जा सकती है।

(10) सरल व शान्तिपूर्ण जीवन (More Stable and peaceful Family life)गाँव के लोगों का विचार बहुत दृढ़ व कठोर स्वभाव का होता है। जो परम्पराएँ बुजुर्गों द्वारा बनायी जाती है उन्हें पूरी निष्ठा व लगन से माना जाता है। आज भी लड़कियों की शिक्षा पर रोक लगायी जाती है, दुल्हनों को कम बोलने, सिर पर पल्ला रखने, पति के अत्याचारों को सहने के लिए कहा जाता है। फोन, सिनेमा घरों, होटल इत्यादि सुविधाओं से लोग वंचित रहते हैं। बड़ों के आदर-सम्मान को गाँवों में बहुत महत्त्व दिया जाता है और उनके निर्णय को स्वीकार कर उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर ही चलना गाँवों की

Scanned with CamScanner

परम्परा है। इस प्रकार लड़ाई-झगड़ों की आशंका कम रह जाती है ओर लोग सादा व सरल जीवन व्यतीत करते हैं।

(11) भाग्यवादिता एवं शिक्षा (Fatalism and illiteracy)लोग शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं और सब कुछ भाग्य पर छोड़ देते हैं उनका मानना होता है कि भाग्य में जो है वही मिलेगा या वैसा ही होगा। इस विचार के कारण लोगों की मानसिकता को बदल पाना कठिन है। अशिक्षा ही ऐसी बातों को दिमाग में घर करने देती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देना और लोगों की इस मानसिकता को दूर करना देश के विकास के लिए अति आवश्यक है।

भारत देश ने आज कई क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर ली है परंतु सबसे बड़ी सफलता उसे तब ही मिल पायेगी, जब भारत देश का हर ग्रामीण व गरीब व्यक्ति शिक्षित हो, उसके पास रोजगार के साधन हों। अंधविश्वास से ऊपर उठके देश की तरक्की में अपना हाथ आगे बढ़ाए, स्त्रियों की दशा में सुधार हो इत्यादि। वे सभी कारण समाप्त कर दिये जायँ, जिससे देश की गरीमा को ठेस पहुँचती हो।

Scanned with CamScanner